

मेत्. 2) *ignoscere, condonare, indulgere*. N.3.8.: तत् क्षमन्तु महेश्वराः; 25.12.: यदि ... मया कृतान्य अकार्याणि तानि त्वङ्क्ष क्षन्तुम् अर्हसि. - *Caus.* क्षमयामि *veniam petere ab aliquo, orare alqm ut ignoscat, se excusare alicui, c. acc. pers.* N.25.9.: तम् आनाय्य नलो राजा क्षमयामास पार्थिवम्। सच तन् क्षमयामास हेतुभिः. (Fortasse goth. *hramja* crucifigo proprie significat vexare, ita ut nitatur formā causali क्षमयामि *facio ut alqs patiat, mutatā sibilante in r* (v. क्षप्, क्षुध); anglo-sax. *hremman* «to hinder, disquiet»; v. क्षम.)

2. क्षम् 4. P.: क्षाम्यामि *id.*

3. क्षम् (r. क्षम्) *terra, in dial. véd.* RIGV. p.41.18.: क्षमि in terra; 203.15.: क्षम्s terrae, v. क्षमा, et क्षमा.

क्षम (r. क्षम् s. अ) *Adj.* 1) *tolerans, perferens, perpetuens*. DR.6.4: क्षेशक्षम. 2) *capax, potens, c. loc. vel infinit.* RAGH.11.5.: सा हि रक्षणविधौ तयोः क्षमा; 8.59.: हृदयन् न त्व अचलम्बितुङ्क्ष क्षमाः. 3) *aptus, idoneus, conveniens*. RAGH.9.50.: मृगवनोपगमक्षमवेष्मृतः; R. Schl. I. 1.49.: न विरोधो बलवता क्षमो रावण तेन ते; SAK.2.9.: उभयोगक्षमङ्क्ष ग्रीष्मसमयम् आश्रित्य. - *Subst. n.* 1) *patientia, toleratio*. BR.3.2.: क्रियताङ्क्ष क्षमम्. 2) *facultas, vis*. BR.1.35.: न तु मे जीवितुङ्क्ष क्षमम्. (Cum *sgn.* 2. cf. *hib. cam* «strong, stout, mighty», *subst.* «power, might», *cama* «brave», *abjectā sibilante*.)

क्षमा f. (r. क्षम् s. अ) 1) *patientia, toleratio*. RAGH.18.8. R. Schl. I.34.33. *sg.* 2) *terra*. (Cf. क्षम् et क्षमा; gr. XAMA, unde *χαμαί, χαμαῖ-ξ, χαμαῖ-ξεν*; confertur etiam *χαμαλός*, inserto *ξ*, sicut in *ξῆς* = क्षस्.)

क्षमावत् (e praec. s. वत्) *patientia praeditus, patiens, tolerans*. IN.4.8.

क्षमिन् (a क्षम vel क्षमा *patientia*, s. इन्) *patientia praeditus*. BH.12.13.

क्षम्प् 10. P. (कान्तौ क. शक्तौ र.; scribunt क्षप्, gr. 110<sup>e</sup>.) *lucere; posse*.

क्षय m. (r. क्षि s. अ) 1) *occasus, interitus, exitium*. H.4.48. BR.2.20. N.26.12. 2) *domus, domicilium, sedes, praesertim deorum*. H.1.47. M.1.2510.: निर्जगाम क्षयान् नरायणस्य; R. Schl. II.6.27.: इन्द्रक्षयसन्निभम् पुरम्. (Hib. *cai domus*.)

क्षयिन् (r. क्षि s. इन्) *periens, evanescens, decrescens*. RAGH.17.71.

क्षर 1. P. 1) *stillare, effundere*. MAH.1.797.: क्षरन्त इव जीमूताः; 5471.: क्षरन्तो रुधिरम् ब्रह्मम्; RAGH.13.74.: क्षरत्सु (गजेषु) ब्रह्मदा मदवारिधाराः. 2) *diffuere, dilabi, dissolvi, evanescere*. MAN.2.99.: इन्द्रियाणान् तु सर्वेषां यद् एकङ्क्ष क्षरतीन्द्रियम्। तेनास्य क्षरति प्रज्ञा दृतेः पात्राद् इवोदकम्. 4.237.: यज्ञोऽनृतेन क्षरति तपः क्षरति विस्मयात्. - *Caus.* *calumniari, falso accusare, c. loc. vel instr. rei*. MAH.2.238.: कश्चिद् आर्यो विष्णुधात्मा क्षारितम् चौरकर्मणि; RAM. III.72.87.: कश्चिद् आर्योऽपि शुद्धात्मा क्षारितश्चापकर्मणा. (Fortasse lat. *scateo cum hac radice cohaeret, ita ut in sca-teo dissolvendum et ortum sit e perduto quodam nomine, cujus suffixum a t inceperit; sca pro scar igitur litteris transpositis ortum esset e csar; v. क्षर*.)

c. आ *Caus.* आक्षारयामि *conviciari, maledicere*. MAN.8.275.: मातरम् ... आक्षारयन्.

क्षर (r. क्षर s. अ) *Adj.* *caducus, fragilis, mortalis*. BH.8.4.15.16. - *Subst.* 1) *m. nubes*. 2) *n. aqua*. MED. (Hib. *suir* «water, a river», nisi hoc pertinet ad सरस् vel सरित्.)

1. क्षल् 1. P. (चलने क. चाले चये र.) *se movere; colligere*. (Cf. चल, शल्, सल्.)

2. क्षल् 10. P. क्षालयामि, *lavare, abluere*. HIT.123.8.: क्षालयम् अपि वृक्षाङ्घ्रीन् नदीवेगे निक्लन्ति. (Lith. *skalauju* eluo, abluo, *skalbjū* lavo, transposito *ks* in *sk*; huc etiam traxerim nostrum *spūle*, mutatā gutturali in labialem.)

c. प्र *id.* N.11.29.: प्रक्षाल्य सलिलेन च; 23.23.: प्रक्षाल्य च मुखम्.